

CHIRPING SPARROW



Title Verification No. : UPENG 03049/24/1/2005-TC



क्षमावाणी - मैत्री दिवस

If

Poem lyrics of If by Rudyard Kipling.

If you can keep your head when all about you
Are losing theirs and blaming it on you;
If you can trust yourself when all men doubt you,
But make allowance for their doubting too;
If you can wait and not be tired by waiting,
Or, being lied about, don't deal in lies,
Or being hated don't give way to hating,
And yet don't look too good, nor talk too wise;

If you can make one heap of all your winnings
And risk it on one turn of pitch-and-toss,
And lose, and start again at your beginnings,
And never breathe a word about your loss:
If you can force your heart and nerve and sinew
To serve your turn long after they are gone,
And so hold on when there is nothing in you
Except the Will which says to them : "Hold on!"

If you can talk with crowds and keep your virtue,
Or walk with Kings - nor lose the common touch,
If neither foes nor loving friends can hurt you,
If all men count with you, but none too much:
If you can fill the unforgiving minute
With sixty seconds' worth of distance run,
Yours is the Earth and everything that's in it,
And - which is more - you'll be a Man, my son!

Pride of Society



Shri S. L. Jain

- Father's Name : Shri Chironji Lal Jain
Date and Place of Birth : 13th March, 1938; Ambah, Dist. Morena, M.P.
Post held : Executive Director, M.P.E.B.
Educational Qualification : B.Sc. (Engg.); M.Tech.
Experience : Professional - 40 years; Religious study - 9 years
Professional Achievements : 1. Was responsible for design, implementation and construction of major Hydel projects in State of M.P.
2. Incharge of establishing private power projects in the state of M.P. as head in MPEB; acquired extensive knowledge in respect of drafting negotiation & finalization of power purchase agreements.
3. Appointed as a single member committee by the Govt. of India to suggest measures for expeditious completion of Rangit Hydel Project in the state of Sikkim.
4. Was appointed as a technical member of the Arbitration Tribunal by the High Court of Bombay.
5. Participated in international seminars/workshops on Hydel Projects in several countries.
6. Adjudged as best article of the year and awarded by Central Board of Irrigation & Power in 1988-89.
- Books & Articles Published : 1. Article on design of Tons Barrage; Published in journal of CBIP.
2. Article on "Aashirvad Ka Vijnan" (आशीर्वाद का विज्ञान)
- Books : 1. ABC of Jainism (Jainism for beginners in English)
2. Self-enlightenment (Translation & Commentry on Chhahaddhaalaa in English)
3. Practical Path (Translation of Ratnakarand Shraavakaachaar in English)
4. Preaching Paradise (Translation of Pravachan Parv in English)
5. Preaching Salvation (Translation of Pravachan Paarijaat in English; in press)

Two years after his retirement, in the year 1997, he met Munishri Kshamasagarji and without any preaching, he got concerned about his self-emancipation. He was later on taught basic concepts of Jainism by Munishri. He accepted several vows and was blessed with the used Picchika of Munishri Kshamasagarji in 1997.

At present he is having Seven Pratimaas of a Religious Householder. Now a days he is devoting his entire time in study and translation in English of several religious books/scriptures under the guidance of Munishri.

He is one of the founder member's of Maitree Samooh.

CHIRPING SPARROW

Year-1, Issue-III

Chirping Sparrow is published quarterly by the Maitree Jankalyan Samiti.
It is circulated to all Young Jaina Awardees and friends of Maitree Jankalyan Samiti.

E-mail : maitreesamooh@hotmail.com

website : www.maitreesamooh.com

Mobile : 9425132090

जैनेतिकल-इंजीनियरिंग और कर्म-सिद्धान्त

विज्ञान के क्षेत्र में बीसवीं शताब्दी में बहुत कार्य हुआ है। विज्ञान की नई-नई खोजों ने मनुष्य को आश्चर्य में डाल दिया है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जीवविज्ञान के क्षेत्र में विशेष प्रगति हुई है। जहाँ एक ओर जीवन के रहस्यों को जानने के सार्थक प्रयास हुये हैं वहीं एक जैसी शक्ल-सूरत वाले प्राणियों को पैदा करने में सफलता हासिल कर ली है। ये भी अटकलें लगाई जा रही हैं कि कुछ वर्षों में मनुष्य के क्लोन भी तैयार करे जा सकेंगे। जैनेतिकल-इंजीनियरिंग जैसे जटिल विषय को भी बहुत आसान बनाया जा सका है। इस विधि के तहत आज हम प्राणी में मनचाहे करैक्टर विकसित कर सकते हैं और अनिच्छित करैक्टर पर रोक लगा सकते हैं। इस प्रकार हम मानव व्यक्तित्व की संरचना भी अपने अनुकूल कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि जब मानव के व्यक्तित्व का निर्माण हम अपने मनचाहे तरीके से कर सकते हैं तो उस मानव विशेष के पूर्वोपार्जित कर्म की परिकल्पना का क्या औचित्य रह गया? लेकिन इस प्रकार का निष्कर्ष निकाल लेना उचित नहीं है। इसकी समीचीन समीक्षा के लिए हमें जैनेतिकल-इंजीनियरिंग तथा कर्म-सिद्धान्त दोनों को समझना होगा। आगे हम इस सम्बन्ध में ही चर्चा करेंगे।

जैनेतिकल-इंजीनियरिंग

जैनेतिकल-इंजीनियरिंग के बारे में जानने से पहले हमें जीव (मुख्यतः मनुष्य) के पैदा होने की प्रक्रिया के बारे में भी जानना होगा। जब नर का शुक्राणु मादा के अण्डाणु से मिलता है तो भ्रूण का निर्माण होता है। इस भ्रूण में कुछ गुणसूत्र नर के तथा शेष मादा के होते हैं। यानी कि इस भ्रूण में नर तथा मादा (माता-पिता) के वंशानुगत गुण आ जाते हैं। जब यह भ्रूण विकसित होकर बच्चा बनता है तो उसके व्यक्तित्व में माता-पिता के वंशानुगत गुण दिखने लगते हैं। बच्चे की लम्बाई, वृद्धि, उसके बालों का रंग, आँखों का रंग तथा वंश परम्परा से चले आ रहे रोग आदि लगभग सभी गुण उस बच्चे में होते हैं।

यहाँ यह जानना भी आवश्यक है कि गुणसूत्र में स्थित वे कौन से तत्त्व हैं जो इस प्रकार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में वंशानुगत गुणों का संवाहन करते हैं? वैज्ञानिकों ने अब यह खोज कर ली है कि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक या फिर पीढ़ी-दर-पीढ़ी कुछ विशिष्ट गुणों के संवाहक जीन हैं। ये जीन DNA नामक अणु पर स्थित होते हैं। मनुष्य की कोशिका में 46 क्रोमोसोम (गुणसूत्र) होते हैं जो कि DNA अणु से सम्बद्ध होते हैं। प्रत्येक DNA पर लगभग दस लाख जीन (gene) होते हैं। ये जीन भी अनेकों रासायनिक तत्त्वों से मिलकर बने होते हैं, जिन्हें न्यूक्लीयोटाइड बेस (Base) कहा जाता है।

दो न्यूक्लीयोटाइड बेस मिलकर एक बेस पेयर बनाते हैं। मनुष्य के DNA में लगभग तीन बिलियन बेस-पेयर होते हैं। वैज्ञानिकों ने प्रायः इन सभी बेस पेयर की जानकारी हासिल कर ली है। अतः अब यह जानना भी नामुमकिन नहीं रहा है कि कौन सा जीन क्या और कैसे कोई कार्य करेगा?

नर के शुक्राणु एवं मादा के अण्डाणु (डिम्ब) से मिलकर भ्रूण बनने की प्रक्रिया एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। इसमें माता तथा पिता

के जीन का मिश्रण होना तथा मात्र उन्हीं जीन का होना जो कि या तो माता में या फिर पिता में हैं, स्वाभाविक है। इस प्रकार भ्रूण में जो नये गुणसूत्र विकसित होते हैं वे स्थिर एवं अपरिवर्तनीय होते हैं।

जैनेतिकल-इंजीनियरिंग की प्रक्रिया में भ्रूण में जो जीन अपने माता-पिता से प्राप्त होते हैं उन्हें कृत्रिम तरीके से परिवर्तित कर दिया जाता है। इस प्रक्रिया में निम्न में से कोई एक कार्य किया जाता है -

1. या तो किसी जीन विशेष को नष्ट कर दिया जाता है अथवा निष्क्रिय कर दिया जाता है।
2. या किसी जीन विशेष को निकाल दिया जाता है।
3. या फिर निकाले हुये जीन के स्थान पर किसी अन्य जीव के जीन को प्रतिस्थापित कर दिया जाता है।
4. अथवा, मौजूद जीन में ही एक और अन्य किसी प्राणी का जीन सम्मिलित कर दिया जाता है।

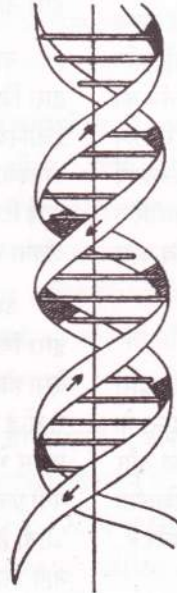
इस प्रकार करने से दो बातें होती हैं। एक तो हमको वे करैक्टर प्राप्त नहीं होते हैं जिन्हें हम नहीं चाहते हैं। जैसे कि कोई वंशानुगत (पीढ़ी-दर-पीढ़ी) चलने वाला रोग हो, उससे हम छुटकारा चाहते हैं। चूँकि आज वैज्ञानिकों को पता है कि किस जीन से कौन-सा रोग होने वाला है, अतः वे उस जीन को या तो नष्ट कर देंगे, या उसे निष्क्रिय बना देंगे या फिर निकाल देंगे। दूसरे हम किसी प्राणी में कोई विशेषता लाना चाहते हैं तो उसमें किसी अन्य प्राणी के उस जीन को प्रतिस्थापित कर देते हैं जिसमें वह विशेषता हो। जैसे - हम किसी वनस्पति में वे जीन पैदा करना चाहते हैं जो कीटों से लड़ने की विशेष क्षमता रखते हों या फिर ऐसे जीन चाहते हैं जो उनकी वृद्धि शीघ्रता से करें। इसके लिए हम किसी अन्य वनस्पति के जीन को इस वनस्पति के जीन के साथ मिला देते हैं जो हमें यह वांछित गुण प्रदान कर सकें। आज प्रति हैक्टेयर गेहूँ की पैदावार पहले से कहीं बहुत अधिक होती है। इसका मुख्य कारण है जैनेतिकल-इंजीनियरिंग है। आज ऐसी वैरायटी के बीजों का निर्माण करा जा

चुका है जो न सिर्फ शीघ्रता से बढ़ते हैं बल्कि कीट आदि के प्रकोप से होने वाले रोगों से बचने की क्षमता रखते हैं। आज प्रायः जो फल, सब्जियाँ तथा अन्य खाद्यान्न प्राप्त होते हैं वे जैनेतिकली इंजीनियर्ड विकसित बीजों का ही परिणाम हैं। इन विकसित बीजों को उन्नत बीज भी कहते हैं।

जिस प्रकार कोई इच्छित करैक्टर हम वनस्पति में प्राप्त कर सकते हैं, इसी प्रकार कोई भी इच्छित/वांछित करैक्टर हम पशु-पक्षी तथा यहाँ तक कि मनुष्यों में भी प्राप्त कर सकते हैं। जब से वैज्ञानिकों ने मनुष्य के जैनेम की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर ली है तब से ऐसा कर पाना और भी अधिक सरल प्रतीत होने लगा है। यह भी अटकलें लगाई जाने लगी हैं कि अब बच्चों को न सिर्फ वंशानुगत रोगों से मुक्त करा जा सकेगा, बल्कि उन्हें बुद्धिमान भी बनाया जा सकता है।

जैनेतिकल-इंजीनियरिंग तथा कर्म-परिवर्तन

सबसे पहले तो यहाँ एक बात यह स्पष्ट कर दें कि जैनेतिकल इंजीनियरिंग के अब तक जो प्रयोग हुये हैं वे प्रायः वनस्पतियों तथा सूक्ष्म जीवों (जैसे - ई. कोली बैक्टेरिया आदि) पर ही किये गये



हैं, अभी ये प्रयोग अतिविकसित प्राणी (जैसे - मनुष्य) पर पूर्ण नहीं हुये हैं। दूसरी बात यह है कि आनुवंशिकता (हैरिडिटी) के अध्ययन से यह तो पता चला है कि शारीरिक भिन्नता का कारण जीन हैं, पर बौद्धिक भिन्नता का सम्बन्ध जीन या आनुवंशिकी से नहीं है। बौद्धिक भिन्नता की व्याख्या परिवेश (इंवायर्नमेंट) के परिप्रेक्ष्य में की जाती है। इससे यह सिद्ध होता है कि जैनेटिकल-इंजीनियरिंग द्वारा बौद्धिक स्तर को विकसित नहीं किया जा सकता है। वस्तुतः विज्ञान के लिए यह एक बहुत बड़ी चुनौती है। फिर भी जब हमें यह ज्ञात है कि कौनसा जीन क्या कार्य करता है, तथा किसी जीन विशेष के स्थान पर किसी अन्य जीन को कैसा प्रतिस्थापित किया जा सकता है, तब कुछ कर्मों पर नियन्त्रण तो हो ही सकता है।

जैनदर्शन के अनुसार जो कर्म हम जिस अवधि और शक्ति का बाँध लेते हैं उसमें यह नियम नहीं है कि उस कर्म को हमें उसी अवधि में या उसी अनुभाग शक्ति के रूप में भोगना ही पड़ेगा। हम अपने पुरुषार्थ के द्वारा बाँधे हुए कर्म के परिणाम में, उसकी अवधि में, उसकी फल देने की शक्ति में और इतना ही नहीं उसकी जाति में भी घटाने, बढ़ाने और बदलने का उपाय कर सकते हैं। जैनदर्शन की भाषा में इसे उत्कर्षण, अपकर्षण और संक्रमण कहते हैं।

जैनदर्शन में ऐसा भी उल्लेख आता है कि कर्म अपना फल द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव और भाव के अनुरूप ही देता है। द्रव्य, क्षेत्र आदि में परिवर्तन होने पर कर्म में परिवर्तन देखने में आता है। कर्मबंध का सारा रहस्य इस बात में है कि पूर्व में बाँधे गए कर्म का फल भोगते समय हमारा व्यवहार कैसा है। कुछ उदाहरण देकर इसका स्पष्टीकरण करता हूँ। जैसे शरीर को पौष्टिक, अनुकूल आहार आदि मिलने पर शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है जिससे असाताकर्म के उदय में होने वाली वेदना में कमी आ जाती है। दवाओं के द्वारा शरीर में उत्पन्न श्लेष्मादि दोषों को हटाकर निकाल दिया जाता है जिससे दुःखनिवृत्ति के साथ-साथ अकाल-मृत्यु का निवारण भी होता है। इस तरह द्रव्य-परिवर्तन से असाता वेदनीय कर्म और आयुर्कर्म प्रभावित होते हैं। ठंडे प्रदेश में जन्मा व्यक्ति यदि किसी गर्म प्रदेश में रहने लगे तो उसके शरीर का रंग परिवर्तित होकर साँवला हो जाता है तथा स्वच्छ, सुन्दर प्राकृतिक स्थान में रहने से रोगी व्यक्ति भी अपेक्षाकृत शीघ्रता से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर लेता है। यह स्थान या क्षेत्र परिवर्तन से होने वाले वर्ण-नामकर्म के परिवर्तन तथा असातावेदनीय के अपकर्षण या संक्रमण का सूचक है। प्रातःकाल रोगी को रोग की वेदना कम प्रभावी होती है, सायंकाल या रात्रि के समय रोग की वेदना अपेक्षाकृत अधिक लगने लगती है तथा ऋतु-परिवर्तन से भी रोग में परिवर्तन देखा जाता है। यह काल-परिवर्तन से होने वाले असाताकर्म के परिवर्तन का द्योतक है। एक ही कर्म का उदय मनुष्य, पशु-पक्षी, देव व नारकी भव से रहने वाले जीवों को अलग-अलग तरह से फल देता है तथा किसी मनोनुकूल कार्य में व्यस्त होने पर व्यक्ति को असाता कर्म के उदय का अनुभव, शारीरिक कष्ट, मानसिक कष्ट आदि कम मालूम पड़ने लगता है। इस तरह भव और भाव परिवर्तन से भी कर्म में परिवर्तन देखने में आता है।

जैनेटिकल-इंजीनियरिंग : कुछ और स्पष्टीकरण

अब तक यह तो सिद्ध करा जा सका है कि जैनेटिकल-इंजीनियरिंग द्वारा जीन में जो परिवर्तन कर दिये जाते हैं वे सब जैनधर्म-सम्मत कर्म सिद्धान्त के अन्तर्गत ही हैं, उसके दायरे के बाहर की बात नहीं है। यहाँ हम कुछ और स्पष्टीकरण देना चाहेंगे। जैनेटिकल-इंजीनियरिंग, जीन और आनुवंशिकता का सम्बन्ध जीवन से है जबकि कर्मों का सम्बन्ध जीव से है। जीवन नश्वर है, परन्तु जीव अजर-अमर है।

एक अन्य बात यह और है कि जैनेटिकल-इंजीनियरिंग जीवन की प्रारम्भिक अवस्था (जाइगोट) में ही की जाती है। जब नर के शुक्राणु तथा मादा के अण्डाणु (डिम्ब) का संयोग (फ्यूजन) होता है तो एक नयी कोशिका का निर्माण होता है जिसे जाइगोट कहते हैं। जाइगोट मात्र एक कोशिका की ही होती है। जाइगोट में अन्य कोशिका की तरह गुणसूत्र तथा DNA होते हैं। इसके DNA पर जो जीव स्थित होते हैं इनमें से कुछ माता के तथा कुछ पिता के होते हैं। ये जीन ही आनुवंशिकता के संवाहक होते हैं। जाइगोट द्विगुणन द्वारा अपनी वृद्धि करता है तथा भ्रूण (एम्ब्रीओ) में विकसित हो जाता है। फिर यह क्रमशः वृद्धि करता हुआ पूर्ण प्राणी के रूप में विकसित हो जाता है।

जैनेटिकल-इंजीनियरिंग प्राणी की उस अवस्था में सम्भव है जब वह जाइगोट वाली स्थिति में होता है। इसमें एक सूक्ष्म शल्य-चिकित्सा की जाती है जिसे माइक्रो-सर्जरी कहते हैं। इस प्रक्रिया में जाइगोट में से उन जीन्स को निष्क्रिय कर दिया जाता है या निकाल दिया जाता है जिन्हें हम नहीं चाहते हैं।

माइक्रो-सर्जरी वस्तुतः पूर्ण विकसित प्राणी में की जाने वाली सर्जरी से बहुत भिन्न नहीं है। जैसे किसी व्यक्ति के दोनों गुदों (किडनी) खराब हों तो यह तय है कि उसके तीव्र असाता वेदनीय कर्म का उदय है और अब वह ज्यादा दिन तक जीवित नहीं रह सकेगा। अब यदि उसे कोई किडनी-डोनर (दातार) मिल जाए तथा उसकी खराब किडनी के स्थान पर दातार की अच्छी किडनी लगा दी जाए तो उस व्यक्ति की दुःखनिवृत्ति हुई अर्थात् असाता-कर्म कम हुआ या टल गया, साथ ही वह अकाल मृत्यु से भी बच गया। इसी प्रकार जैसे किसी की दोनों आँखों में मोतियाबिन्द (कैटरैक्ट) है और उसे अब कुछ दिखाई नहीं देता है। अब यदि उसकी आँखों का ऑपरेशन कर दिया जाए तो उसे दिखने लगता है।

उसे चक्षु-दर्शनावरणीय कर्म का क्षयोपशम तो प्राप्त था पर बाह्य-उपकरण में खराबी आ जाने से वह कर्म का क्षयोपशम अपना कार्य नहीं कर पा रहा था। शल्य-चिकित्सा द्वारा उस जीव के बाह्य-उपकरण (द्रव्येन्द्रिय) की खराबी को दूर करके कर्म के क्षयोपशम का लाभ ले लिया गया, साथ ही आँख की खराबी से उसे जो दुःख प्राप्त होता उस दुःख की निवृत्ति भी हो गई। दुःख की निवृत्ति होना असाता वेदनीय कर्म के संक्रमण का सूचक माना जा सकता है।

इसी प्रकार यदि किसी को कोई वंशानुगत रोग है तो उन्हें भी चिकित्सा द्वारा ठीक करा जा सकता है तथा कर्मों का संक्रमण किया जा सकता है।

यहाँ कहने का तात्पर्य यह है कि चिकित्सा या शल्य-चिकित्सा (सर्जरी) द्वारा जिस प्रकार कर्मों में परिवर्तन करा जा सकता है, उसी प्रकार जैनेटिकल-इंजीनियरिंग में यह कार्य प्राणी के विकसित होने से बहुत पहले जाइगोट वाली अवस्था में माइक्रो-सर्जरी द्वारा कर दिया जाता है। ऐसा मानने और समझने में कोई दिक्कत नहीं आती है। जैनेटिकल-इंजीनियरिंग को हमें इसी परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए।

अन्त में एक प्रश्न यह और रहता है कि क्या जैनेटिकल-इंजीनियरिंग द्वारा किसी नयी प्रजाति को पैदा करा जा सकता है। इसका उत्तर हाँ है और ऐसा होने पर भी जैन-सिद्धान्तों में कोई विरोध नहीं आता है। प्राकृतिक तरीके से घोड़े एवं गधे के बीच संकरण करवाने से खच्चर जैसा नया प्राणी बना। इसी प्रकार भेड़ और बकरी के बीच संकरण से भेकरी नामक नया प्राणी बना। जब नयी प्रजाति को संकरण द्वारा पैदा कराने से जैन-सिद्धान्तों में कोई आपत्ति नहीं आती है तो फिर जैनेटिकल-इंजीनियरिंग द्वारा ऐसा कराने से भी कोई आपत्ति नहीं आती है।

Q. एकाग्र कैसे रहा जाये? अपने पर नियन्त्रण रखने का उपाय क्या है?

जयन्त जैन, जयपुर CBX5089

How to gain confidence, give me some tips to have control on my emotions and to have strength to achieve the target?

Neha Jain, Kota CBB5016

A. यदि आत्मविश्वास को कमजोर करने वाली बातों से बचा जाये तो हम अपने आत्मविश्वास को मजबूत कर सकते हैं। आत्मविश्वास कम करने वाली बातों में हैं :

1. **नकारात्मक सोच** - हर चीज या घटना को हम अच्छी दृष्टि से भी देख सकते हैं और उसका गलत अर्थ भी लगा सकते हैं। होना यह चाहिए कि हम उसके अच्छे पहलू को ही देखें।
2. **असफलता का भय** - जब हम कोई भी काम करते हैं या तो हमें सफलता मिलती है या हम असफल हो जाते हैं। हमें असफलता से डरना नहीं चाहिए। असफलता सफल होने की प्रेरणा देती है, ताकि हम और अधिक मेहनत करके सफलता पा सकें।
3. **अत्यधिक संरक्षण** - यदि हमारे माता-पिता हमारी बहुत अधिक देखभाल करते हैं तो हम उनके ऊपर आश्रित हो जाते हैं। ऐसे में हम स्वविवेक से कोई कार्य नहीं कर पाते हैं। हमारा आत्मविश्वास धीरे-धीरे कम होता जाता है। इसलिये हमें अपने पालकों पर उतना ही आश्रित रहना चाहिये जिससे हमारा आत्मविश्वास कम न हो।
4. **हीनता का भाव/संकोच** - हम कार्य में सही होते हुये भी संकोच करके अपनी योग्यता प्रकट नहीं करते और हमें ऐसा लगने लगता है कि हम इस कार्य के योग्य नहीं हैं। यह हीन भावना ही हमारे आत्मविश्वास को कमजोर बनाती है।
5. **सफलता में विलम्ब** - कई बार कार्य करते समय यदि हमें समय से सफलता प्राप्त नहीं

होती तो हम निराश हो जाते हैं। लेकिन हमें धैर्यपूर्वक अपने सफल होने का इन्तजार करना चाहिए; क्योंकि कार्य का फल अपने समय अनुसार मिलता है, हमारे सोचे अनुसार नहीं।

6. **पर्याप्त प्रशंसा न मिलना** - हमारे द्वारा किये गये कार्यों को प्रशंसा न मिलने पर हम उदास हो जाते हैं। दरअसल हम हर कार्य करने के बाद प्रशंसा की आकांक्षा रखते हैं। होना यह चाहिए कि कार्य करके स्वयं को प्रशंसिक महसूस करें, अन्य कोई प्रशंसा करे या न करे।
7. **पर्याप्त अवसर का अभाव** - कई बार हमारे चाहते हुये भी कार्य करने का अनुकूल अवसर प्राप्त नहीं होता। ऐसी स्थिति में धैर्यपूर्वक अवसर की तलाश में लगे रहना चाहिए और अवसर मिलते ही उसे हाथ से नहीं गँवाना चाहिए।
8. **भविष्य के प्रति अनिश्चितता** - हम कार्य करते समय अपने मन में उसकी सफलता का विचार करते हैं, पर यदि असफल हो गये तो क्या होगा इस तरह का भाव भी मन में बना रहता है, जिससे कि भविष्य के प्रति अनिश्चितता का भाव उत्पन्न हो जाता है। जबकि हमें विचार करना चाहिए कि हम जो कार्य करेंगे, देर-सवेर उसका फल हमें अवश्य मिलेगा, इस बात के लिये हम निश्चित रहें। अच्छे कर्म का फल अच्छा और बुरे कर्म का फल बुरा होता है, यह शाश्वत नियम है।
9. **बचपन में प्यार की कमी** - हम सोचते हैं कि बचपन में हमें माता-पिता का कम प्यार मिला है, पर यह सही नहीं है। हर माता-पिता जितना प्यार दे सकते हैं उतना जरूर देते हैं। असल में होना यह चाहिये कि कोई हमें प्यार दे या न दे हम सभी को प्यार करें और अपने लक्ष्य के प्रति सजग रहें।
10. **अधिक आकांक्षायें** - अपनी योग्यता से अधिक आकांक्षायें करने में असफलता ही हाथ आती है, इसलिये अपनी अपेक्षाओं को नियंत्रित करें। जो असंभव और दूसरे का

अहित करने वाली अपेक्षायें/आकांक्षायें हैं उन्हें पहचानें और उनका त्याग करें।

Q. क्या मनुष्य या तिर्यच गति का जीव पुनः मनुष्य या तिर्यच गति में आ सकता है। ठीक इसी प्रकार देव व नरक गति के जीव पुनः देव या नरक गति में आ सकते हैं। यदि हाँ तो प्रमाण बताइये? यदि नहीं तो क्यों?

दिनेशकुमार, अम्बाह (मुर्ना)

A. मनुष्य एवं तिर्यच गति के जीव मरण करके चारों गतियों में अर्थात् मनुष्य, तिर्यच, देव और नारकी में किसी भी एक में उत्पन्न हो सकता है। लेकिन देवगति का जीव मरण के पुनः देव और नरक गति में उत्पन्न नहीं होता है। इसी प्रकार नरक गति का जीव मरण के देव और नरक गति में उत्पन्न नहीं होता। यह गति-अगति का नियम शाश्वत है। इसमें तर्क नहीं किया जा सकता है। जैसे वन वे ट्रेफिक में गाड़ी एक ही तरफ आ-जा सकती है, इसी तरह यह नियम है।

Q. स्वयंभूरमण समुद्र के मनुष्य ही सोलहवें आदि स्वर्ग में जावेंगे। क्या यहाँ के मनुष्यों सोलहवें स्वर्ग में जाने की योग्यता नहीं है।

सचिन जैन, पिपरिया

A. स्वयंभूरमण समूह के पशु ही मरण के सोलहवें स्वर्ग में उत्पन्न हो सकते हैं। वहाँ मनुष्यों का अभाव है अतः वहाँ से उनके सोलहवें स्वर्ग में उत्पन्न होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

Q. भगवान के आगे 1008, आचार्य एवं मुनि महाराज के आगे 108 एवं माताजी व क्षुल्लकजी के आगे 105 क्यों लगाते हैं?

अनन्त जैन, नागौर RJC4017

A. वैसे इन उपाधियों का लगाना अनिवार्य नहीं है। पर इनका उपयोग किया जाता है तो उसके अर्थ भी हैं। जैसे भगवान के 1008 नाम होते हैं तथा शरीर में 1008 अच्छे लक्षण होते हैं। इस अपेक्षा से भगवान के नाम के आगे 1008 का उपयोग करते हैं।

मुनिराज के आगे 108 का उपयोग करते हैं। 108 प्रकार से कर्मों का आस्रव होता है। कर्म, समरम्भ, समारम्भ, आरम्भ, कृत, कारित, अनुमोदना और मन, वचन, काय द्वारा होते हैं। इन तीन-तीन का परस्पर गुणा करने पर 27 आते हैं, और कोई न कोई कषाय जीव में विद्यमान रहती है। अतः 4 कषायों का 27 के साथ गुणा करने पर 108 होते हैं। मुनि महाराजजी 108 प्रकार से अशुभ कर्मों के आस्रव रोक देते हैं, मात्र शुभ कर्मों का आस्रव करते हैं। अशुभ कर्मों का आस्रव रोक देने की अपेक्षा से उनके नाम के आगे 108 लिखा जाता है। और 108 अच्छे लक्षण भी मुनिराज के होते हैं। जिनमें 28 मूलगुण, 22 परिषयजय, 13 प्रकार के चारित्र, 12 तप, 12 अनुप्रेक्षा, 10 धर्म, 5 आचार और 6 जीव रक्षा होते हैं।

क्षुल्लक के 105 गुण होते हैं इसलिए उनके साथ 105 का उपयोग किया जाता है, जैसे 22 अभक्ष्य त्याग, 12 व्रत, 12 तप, 12 अनुप्रेक्षा, 8 मूलगुण, 7 व्यसन त्याग, 6 आवश्यक, 6 जीव रक्षा, 5 समिति (अंशतः), 3 गुप्ति (अंशतः), 11 प्रतिमा, एक भुक्ति (एक बार भोजन) होते हैं।

आर्यिका माताजी के 3 गुण मुनियों की अपेक्षा कम हो जाते हैं। अतः उनके साथ 105 का उपयोग किया जाता है। स्थिति भोजन/अस्नान/अचेलकत्व यह तीन गुण कम हो जाते हैं।

Q. What is salvation? Is there any connection between soul & God (Infinite)? Do they have any existence? If so how? Please explain.

Anant Jain, Nagaur

A. समस्त कर्मों से रहित विशुद्ध अवस्था का नाम मोक्ष है। आत्मा ही अपने आत्म-पुरुषार्थ के बल पर परमात्मा बन सकती है। यही आत्मा और परमात्मा के बीच सम्बन्ध है। परमात्मा अलग से कोई वस्तु नहीं है। वह तो आत्मा की परम विशुद्ध अवस्था का ही नाम है। जो हम यह प्रश्न पूछ रहे हैं उसका अस्तित्व ही

आत्मा के अस्तित्व का बोध कराता है और आत्मा की परम विशुद्ध अवस्था होती होगी, इस बात का भी हमें विश्वास करना होगा। यही परमात्मा के होने का विश्वास है और इनके अस्तित्व को सिद्ध करता है।

Q. जब मैं बारिश के मौसम में ट्यूबलाइट में पढ़ती हूँ तो मुझे छिपकली कीड़े को खाती दिखती है तो कष्ट होता है। मुझे लगता है मेरी वजह से जीवों को कष्ट पहुँच रहा है। मैं अपने मन को कैसे समझाऊँ, बताइये?

अनुभा जैन, देवरी सागर

A. जैन धर्म के अनुसार श्रावक हर कार्य सावधानीपूर्वक करता है जिससे कि जीवों की हिंसा न हो। साथ ही वो जीव हिंसा के भाव से भी बचता है। हम इस प्रकार की व्यवस्था करने का प्रयास करें जिससे कि छिपकली का आना संभव न हो सके। फिर भी यदि छिपकली आकर कीड़ों का भक्षण करती है तो हमें विचार करना चाहिए कि हमारा जीवों को मारने का भाव नहीं है। हमारे ट्यूबलाइट जलाने पर छिपकली के आने पर कीड़ों की हिंसा होती है। अपने इस दोष को सुधारने की कोशिश करनी चाहिये।

Q. यदि एक छिपकली कीड़ों को खा रही है और हम छिपकली को भगाकर कीड़ों को बचावें तो क्या यह सही है? छिपकली का भोजन कीड़े हैं और क्या छिपकली को उसके भोजन से वंचित करने का पाप तो नहीं लगेगा ?

अनुभा जैन, देवरी सागर

A. एक सिद्धान्त है कि मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है। इस दृष्टि से यदि हम कीड़ों को बचाते हैं तो यह श्रेष्ठ कार्य होगा।

Q. ऐसा सुना जाता है कि कोई स्त्री मरकर पुरुष योनि में जन्म नहीं ले सकती - इस कथन में कितनी सत्यता है।

अनन्त जैन, नागौर RJC4017

A. यह कथन सत्य नहीं है। कोई भी जीव सम्यक् दर्शन प्राप्त कर मरण उपरान्त पुरुष पर्याय में उत्पन्न हो सकता है इसलिए स्त्री भी मरकर पुरुष पर्याय में उत्पन्न हो सकती है। तीर्थंकर की माँ

दो या तीन भव में नियम से मोक्ष चली जाती है।

Q. रात्रि में द्वीप प्रज्वलन से जीव हिंसा होती है। अगरबत्ती का प्रयोग करना कहाँ तक उचित है?

श्रीमती प्रीति दोषी, मंगलौर

A. जैन धर्म में पूजा पद्धति दो प्रकार से प्रचलित है। एक में द्वीप प्रज्वलन को मान्यता दी गई है यहाँ पर जीव हिंसा का विचार नहीं है। तथा अगरबत्ती या धूप जलाने को भी उचित माना है उसमें अल्प हिंसा होती है ऐसा माना गया है। लेकिन दूसरी मान्यता के अनुसार द्वीप, धूप जलाने का निषेध किया गया है और इसमें हिंसा मानी गयी है।

Q. जीवन में एक अच्छा व्यक्ति बनना ही धर्म की शुरुआत है। यदि हमारे भीतर स्वयं भगवान है तो मन्दिर क्यों?

सचिन जैन, कोलारस

A. सद्विचार, सद्ज्ञान और सदाचरण करने से ही व्यक्ति का जीवन अच्छा बनता है। जिस व्यक्ति के जीवन में ये तीन बातें आ जाती हैं उसे ही श्रेष्ठ मनुष्य कहते हैं। इसी तरह से ही जीवन में धर्म की शुरुआत होती है। धर्म तो वस्तु के स्वभाव को कहते हैं, अर्थात् आत्मा अपने स्वभाव यानी वीतरागता को प्राप्त करले वह ही धर्म है। जीवन को अच्छा बनाना वीतरागता पाने के लिए अच्छा है।

हर आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति निहित है इसलिये कहा गया है कि हर मनुष्य स्वयं भगवान है। मन्दिर में विराजी वीतराग छवि का दर्शन करके हमें इस बात का ज्ञान होता है कि हमें भी अपने भीतर वीतरागता प्राप्त करनी है। इसलिए भगवान बनने की शक्ति होते हुए भी उस शक्ति को प्रगट करने के लिये भगवान के दर्शन अनिवार्य हैं।

आपको यदि किसी भी विषय में कोई भी शंका है तो आप अपना प्रश्न हमें भेज सकते हैं। मुनिश्री द्वारा उत्तर दिया जायेगा। यथासम्भव उसे प्रकाशित करने की कोशिश करेंगे।

Set Yourself Free with Forgiveness

A mother in a metro slum cluster recently got her ailing daughter killed by her son in order to implicate a neighbour in the murder. The family had a dispute with this neighbour. Wreaking vengeance itself is a terrible thing. Even worse is the increasing insensitivity among us to each other's predicaments. Negative emotions like fear, fury and envy manifest themselves in horrific acts like the above-mentioned one, when rational perspective is lost - the only feeling that predominates seems to be to 'get even', no matter what. Even if you have to cut your nose to spite your face.

Harbouring resentment against someone - whether at home or at the work place, always ends up corroding your peace of mind. What is more, you then begin to plot and plan to find out ways of getting even with those who 'hurt' you. Basic to happiness is the understanding that we can never hope to gain anything by hurting another. It is a human trait to exercise authority, flaunt power and gain the upper hand in order to degrade and belittle those whom we perceive as our 'enemies'. We like to inflict hurt, and we attempt to draw on their suffering to find our own happiness. We only end up with a transitory and false sense of self-esteem.

In our day-to-day relationships, we are bound to experience unkindness, little hurts, injustices and disappointments. This might lead to resentments, which we often internalise. This

accumulated resentment acts like slow poison, eventually destroying relationships and it finally destroys our selves.

Every year the Jain community observes ten days of *pariyushan* - a time devoted to introspection and inner cleansing - trying to get rid of pride, fear and animosity. It is a time for reflection, purification and renewal. On the last of day of *pariyushan* a 24-hour fast is observed for forgiveness. The prayer is : "I forgive those who have injured me and I beg for forgiveness from all whom knowingly or unknowingly I may have harmed. I declare friendship with all living beings, I have enmity towards none". On that day people mend fences with one another by reconciling differences in person or through letters.

Forgiveness is a rare virtue. It is often difficult to forgive. It hurts our pride when we are compelled to say, "I'm sorry". To forgive is not a sign of weakness. *Kshama veerasya bhushanam,*



forgiveness is the ornament of the brave, contends the scriptures. If we expect God and fellow beings to forgive us for our shortcomings, it follows that we too must be willing to show forgiveness towards those who wrong us. We should try to cultivate a forgiving spirit so that even before the other person expresses regret, we have already forgiven.

Seeking forgiveness or admitting that we are in the wrong has a healing effect. When you are honest with yourself, you clear your mind. Your conscience is relieved; you no longer need to wear a mask. Forgiveness restores relationships. It creates trust.

J P Vaswani tells the story of a girl who rebelled against her loving parents and left home. Rudderless and alone, depression prompted her to contemplate suicide. That night, she decided to return to her childhood home before taking the drastic step. She was taken aback to find the front door wide open, at that unearthly hour. She called out to her mother. A frail old figure framed the open doorway. "Welcome home, my child... we knew you would return some day" exclaimed the mother. Overcome with emotion, the girl fell into her mother's arms, chastened.

Vaswani adds that like the old mother, God is waiting to love and forgive us when we repent and seek atonement. The spirit of forgiveness sets you free from elements like hatred, resentment and anger which hold you in their vice-like grip.

They make you sick. When these are removed, you become whole; even longstanding ailments disappear.

Talking of sickness, it is important to ensure that no bitterness takes root in our soul that can affect the body and spirit. Guilt can eat away a

person's inner core. Envy, selfishness, resentment and vindictiveness have caused heart disease, colitis and blood pressure in many. No medicine can wipe out, as Macbeth discovered to his dismay, "the written troubles of the brain". Tranquillisers cannot help when

guilt gnaws at one's conscience. The act of forgiving, however, has magical powers of restoration. Therefore, practising *kshama*, forgiveness, is not a platitude - it is a sound prescription for a happy and healthy life.

- M.P.K. Kutty

DO YOU KNOW YOUR MITHAI

Is your mithai Non-vegetarian?

The thought of reaching out for a piece of mouth-watering mithai and savoring it is a tempting one, no doubt, but if it is covered with a layer of glittering silver, you just might want to take a closer look.



The making of Varak is at once an interesting and a repulsive process. A process which could otherwise have been admired as a remarkable achievement of human skill instead gets judged for its ethical mooring from the very first step ... the sourcing of



material from the slaughterhouse. Follow the steps ... Discover the connection between the slaughterhouse and the sweetshop.

The beating of silver between tissues of slaughtered animal; the most closely guarded secret of the varak industry.



Skins of slaughtered goat and sheep ... soaked for dehairing in filthy, infested vats for 12 to 13 days.



Workers peel away the epidermal layer from the skin in a single piece.



The animal tissue layers, treated in a decoction of about 70-80 herbs for 30 minutes to deodorize, soften, and warm them, are then coloured and left to dry on wooden boards.



Workers cut out square pieces measuring 19 cm x 15 cm from the treated animal tissues. Pouches are made from these pieces and are stacked into booklets. Booklets are given covers of goat/lamb suede.

Thin strips of drawn silver are placed inside the pouches.

Workers pound away at the pouches with wooden mallets for 3 hours to beat the silver inside



into the ultra thin varak of thicken as low as a fraction of a micron.

There is always the possibility of some of the animal tissue remaining on the surface of silver foil.

Beat away myths about ... machine made varak -

Many claims are made regarding the availability of ahimsak varak that is not beaten inside animal tissue but is supposedly machine made. Such claims have never been substantiated with details of the varak craftsmen have revealed that their manual methods is the only one used in India.

The Gut Feeling

That the varak booklet is made from animals intestine. this is uniformly denied by all craftsmen.

How good is eating varak for your health?

It is positively bad ! Nutritionists are sceptical about its very digestibility leave alone any benefits from its consumption. The ethical aspects of varak manufacture need not to be the only reason for avoiding it. So

whether varak is made from animal's intestine or not, ask yourself how good it is for our intestine.

So, is it wrong to eat varak? On an average 30 tons of varak are consumed every years. Look beyond the glitter the next time you buy mithai. And also look for varak in mukhwaas, paan & fruits.

What you can do?

- Avoid refuse varak covered foods, even on auspicious occasions.
- Ask your confectioner to stock sweets without varak and save himself the expense.
- Raise the topic in a loud voice in a sweet shop, to discourage those buying varak sweets.

भाई तुम महान हो

- मुनि क्षमासागर

मैंने आकाश से कहा -

तुम बहुत ऊँचे हो

आकाश ने

मुस्कराकर कहा -

तुम मुझसे भी

ज्यादा ऊँचे हो

मैंने सागर से कहा -

तुम खूब गहरे हो

सागर ने

लहराकर कहा -

तुम मुझसे भी

अधिक गहरे हो

मैंने सूरज से कहा -

सूरज दादा !

तुम बहुत तेजस्वी हो

सूरज ने हँसकर कहा -

तुम मुझसे भी

कई गुने तेजस्वी हो

मैंने आदमी से कहा -

भाई तुम महान हो

आदमी झट से बोला -

तुम ठीक कहते हो।

Man You Are Great

- Translation Sunita Jain

I said to the sky,

'You are so high!'

The sky smiled

and said, 'You are

higher than me.'

I said to the sea,

'You are so deep.'

The sea swelled up and said,

'You are deeper than me.'

I said to the sun,

'Dear Sun,

you are so bright.'

The sun laughed and said,

'You are many times

brighter than me.'

I said to man,

'Man, you are great.'

Man said without

hesitation,

'You are so right.'

- 'मुक्ति' से साभार

सीमा पर बैठा फौजी रामसिंह बार-बार अपनी कलाई देख रहा था। उसकी बहिन सुनीता की राखी तो आ चुकी थी, पर बँधवाए किससे? रामसिंह इसी उधेड़बुन में खोया सीमा पर गश्त लगाता जा रहा था - काश वो अपने घर जा पाता, पर घर तो तब जाए, जब उसे छुट्टी मिले। ये आतंकवादी भी तो शांत नहीं बैठते - रामसिंह ने सोचा।

बहिन का भेजा मिठाई का डिब्बा उसके हाथ में था। खालिस खोए की बनी मिठाई। कितनी अच्छी मिठाई बनाती है सुनीता। पर मिठाई खाने का असली मजा तब आता, जब वह मिठाई अपने हाथों से खिलती। 'यहाँ कौन रखा है मिठाई खिलाने वाला' - रामसिंह बुदबुदाया। फिर उठा और सीमा के किनारे-किनारे चलने लगा। वह कितनी दूर निकल आया उसे खुद पता नहीं था।

अचानक भेड़ों का एक झुंड सीमापार से आ गया। वह सोचने लगा - हमसे अच्छे तो यह जानवर हैं जिनके लिए सीमा पार करने में कोई रोकटोक नहीं, किसी प्रकार का बंधन नहीं और हम तो सीमा में घुसने की बात तो दूर, आँख उठाकर भी देख लें तो कयामत आने लगे। तभी भेड़ों के पीछे एक काला साया नजर आया। वह चौकन्ना हो गया। हो न हो यह आतंकवादी है। काले साये को बंदूक के निशाने पर लेकर वह धीरे-धीरे से आगे बढ़ा।

'हाथ ऊपर करो, वरना गोली मार दूँगा' - रामसिंह कड़ककर बोला।

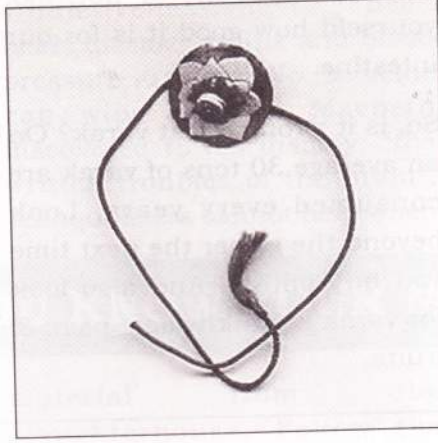
'गोली मत चलाना, मेरी भेड़ें गलती से आपकी तरफ आ गई हैं' उधर से जनाना आवाज़ आई।

'कौन हो तुम? क्या नाम है तुम्हारा?' - फौजी की तरह रामसिंह ने पूछा।

'जी, रुखसाना नाम है मेरा, मैं पाकिस्तान में रहती हूँ' - यह कहकर उसने चेहरा दिखाया।

कोई सोलह-सत्रह साल की लड़की होगी। दुबली पतली गोरी, तीखे नैन-नख्खा। बिल्कुल वैसी ही जैसी उसकी सुनीता। रामसिंह को सुनीता की याद आ गई। अक्सर सीमावर्ती गाँव के लोग प्रवेश कर जाते थे भारतीय सीमा में। गरीब चरवाहों आदि को हिदायत देकर छोड़ दिया जाता है।

'मेरी भेड़ें इस पार आ गई थीं, हमें माफ कर दीजिए और भेड़ें ले जाने की इजाज़त दे दीजिए' - लड़की के स्वर में भोलापन था। 'नहीं पहले ये बताओ, पढ़ती हो?' - रामसिंह ने पूछा।



'जी हाँ, 11 जमात तक पढ़ी हूँ। मेरे अब्बा टीचर हैं, माँ बहुत अच्छा खाना पकाती हैं और गोश्त भी। आप खाओगे? अगर आप मुझे वापस जाने दोगे तो एक भेड़ मैं आपको दे जाऊँगी।' रुखसाना कहे जा रही थी। रामसिंह को मज़ा आ रहा था। उसे ऐसा लग रहा था कि उसकी सुनीता उसके सामने खड़ी बोल रही हो।

'अच्छा अब मैं जाऊँ' - वह बोली।

'तुम जानती नहीं हो, तुमने क्या जुर्म किया है, बगैर इजाज़त दूसरे मुल्क में प्रवेश। तुम्हें ऐसे नहीं जाने दूँगा। जाने क्या मकसद है तुम्हारा?' - रामसिंह ने तेज़ स्वर में कहा।

'अरे वाह! सीमा पार करना क्या इतना बड़ा जुर्म है? भेड़-बकरियाँ सीमा लाँघकर वापस चली जाती हैं, लेकिन मुझे नहीं जाने दे रहे हो' - रुखसाना गुस्से में बोली।

'ऐसे कैसे जा सकती हो तुम। हमारे देश में आ गई हो, इसलिए हमारी कैदी हो। भेड़-बकरियों को तो सरहद का ज्ञान नहीं रहता, पर तुम्हें तो मालूम था कि तुम क्या करने जा रही हो' - रामसिंह ने रुखसाना पर सवाल दागा।

'ये पहली बार नहीं हुआ है, हमारी भेड़-बकरियाँ अक्सर आपकी तरफ आ जाती हैं।' - रुखसाना रुआँसी होकर बोली।

'तुमने अपना गुनाह भी कुबूल कर लिया है। इस गुनाह की सज़ा मिलेगी' - रामसिंह का स्वर सख्त था।

सज़ा का नाम सुनते ही रुखसाना घबरा गई। वह रोने लगी। रामसिंह को तो अब और मज़ा आ रहा था। रुखसाना के गाल पर बड़े-बड़े आँसू बहने लगे थे।

'या अल्लाह! ये मुझसे क्या हो गया, एक लकीर को पार करना इतना बड़ा गुनाह हो जाएगा, मुझे मालूम नहीं था। मुझ पर रहम करो, मुझे जाने दो' - रुखसाना ने गिड़गिड़ाकर कहा।

रामसिंह उसे और परेशान नहीं करना चाहता था, फिर भी उसने बनावटी सख्ती दिखाकर कहा - 'ऐसा तो हो नहीं सकता कि आप इस मुल्क से सज़ा पाए बिना चली जाएँ। इसकी आपको सज़ा तो मिलेगी ही। ऐसी सज़ा कि ज़िंदगी भर याद रहे।' इतना कहकर रामसिंह ने राखी और मिठाई का डिब्बा निकाला और बोला - 'रुखसाना, आज हमारे यहाँ रक्षाबंधन है। इस अवसर पर बहनें अपने भाई की रक्षा के लिए उसकी कलाई पर राखी बाँधती हैं। मेरी बहन ने मेरे लिए राखी और मिठाई भेजी है, लेकिन मुझे राखी बाँधनेवाला कोई नहीं है। मुझे तुममें अपनी बहन की सूरत नज़र आई है। सज़ा के तौर पर तुमसे राखी बाँधवाना चाहता हूँ। या तो तुम सज़ा पूरी कर दो या बिना राखी बाँधे वापस चली जाओ। मैं तुम्हें रोऊँगा नहीं' - बात पूरी करते-करते रामसिंह की आँखें डबडबा आईं।

रुखसाना बोली - 'भाईजान! मुझे इतना बड़ा इनाम दे रहे हैं, इसे सज़ा का नाम मत दीजिए।' कहकर रुखसाना ने उसकी कलाई पर राखी बाँध दी। रामसिंह ने अपनी पाकिस्तानी बहन का मुँह मीठा कराया। दोनों देर तक बातें करते रहे।

'मेरे भाईजान ने मुझे जो सज़ा दी है, उसको मैं कभी भुला नहीं पाऊँगी' - रुखसाना जाते हुए बोली।

रामसिंह बोला - 'रुखसाना, सज़ा तो तुमने भी मुझे दी है। अब मुझे अगली राखी पर दो-दो बहनों की याद आएगी।'

रुखसाना रो पड़ी। रामसिंह से विदा लेते वक्त भी उसके आँसू थम नहीं रहे थे। रामसिंह भी डबडबाई आँखों से रुखसाना को ओझल होने तक देखता रहा।

आज फिर रक्षाबंधन है। सुनीता की राखी आ गई है, पर रामसिंह को किसी और की राखी का भी इंतज़ार था।

तभी उसके दोस्त कैप्टन मोहन ने आवाज़ लगाई - 'रामसिंह, तेरे लिए पाकिस्तान से किसी रुखसाना की राखी आई है।' यह सुनते ही उसने दौड़ लगा दी।

- कुलदीप कुमार बबेले, जबलपुर (म.प्र.)

वर्षों की खोज और प्रतीक्षा के बाद यदि आपको कोई ऐसा साथी या दोस्त मिल जाये जिसके सामने अपने प्रश्नों को रख सकें, मन की शंकाओं का समाधान कर सकें, दिल के घावों को बता सकें तो क्या आप ये महसूस नहीं करेंगे कि कृष्ण की प्रखर प्रज्ञा से उद्भाषित गीता की कोई प्रति मिल गई हो आपको।

अभिलाषा चौधरी, BCA, पथरिया

“Chirping Sparrow” एक ऐसा हृदयस्पर्शी पत्र है जिसने देश की भावी पीढ़ी नवयुवकों को आगे बढ़ने तथा राष्ट्र, धर्म, माता-पिता का नाम रोशन करने की प्रेरणा दी एवं राह से भटक रहे नवयुवकों को धार्मिक आचरण सिद्धान्तों से जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी है। मैं मैत्रीसमूह के इस उपकार का आजीवन कृतज्ञ रहूँगा। इसकी “महत्त्वपूर्ण चिट्ठी” हमें जीवन में संस्कारवान बनने की शिक्षा देती है। इसकी शिक्षाप्रद कवितायें एवं कहानियाँ हमें आगे बढ़ने एवं अपना लक्ष्य प्राप्त करने में, आत्मविश्वास बढ़ाने में सहायता करती हैं। “Pride of Society” से हमें सफल व्यक्तियों के बारे में जानकारी मिलती है। कृपया आप इसमें सिविल सर्विस परीक्षा में सफल व्यक्तियों की जानकारी दें।

मेरा मैत्री समूह से निवेदन है कि Chirping Sparrow जो यंग जैन अवार्ड का स्मृति चिह्न है उसे आप सतत रूप से भेजने का कष्ट करें। आपके इसी सहयोग के साथ जय जिनेन्द्र !

सचिन जैन, पथरिया

मुझे आपकी अनोखी (Unique) चिट्ठियाँ सी चहकती पत्रिका आँगन में आते ही, अपार हर्ष का अनुभव होता है, और लगता है, शायद मुनिश्री ने अपना आशीर्वाद भेजा हो। यह आशीर्वाद भी तीन महीने के इंतजार के बाद प्राप्त होता है और यह भी बढ़े सौभाग्य से।

इस पत्रिका से हर प्रकार की जो “Student life” विद्यार्थी जीवन एक आदर्श जीवन (समय की बचत, मानवता, भावना) के बारे में बहुत कुछ सीखने को मिलता है। इसके अलावा (मार्गदर्शन, Your Space, young achievers, महत्त्वपूर्ण चिट्ठी) मुनिश्री द्वारा समस्याओं का समाधान “आस्था” “Truth about tradition” बहुत ही अच्छा लगता है, अर्थात् इसके हर पेज में एक अलोखी खबर जरूर होती है। इस पत्रिका के माध्य से हमें तथा हमारे बहुत से पड़ोसियों को भी “मार्गदर्शन” मिलता रहता है।

पत्रिका की भाषा-शैली भी बहुत साहित्यिक है तथा हर शब्द अर्थपूर्ण होता है, जिससे साहित्यिक ज्ञान भी सीखने को मिलता है। शायद मैं इस पत्रिका के बारे में जितना लिखूँ उतना कम है। यह पत्रिका एक प्रकार से “गागर में सागर” जैसा काम करती है।

श्रेयांश जैन, जबलपुर

I got the new edition of “Chirping Sparrow”. It is very nice. It gets lot of information, knowledge in itself. A small Magazine include so many knowledgeable things, that is just brilliant. It is a Marvellous effort of Maitree Samooh to provide us such a Magazine which is so useful to us. I feel very pride that I am also the member of this big family. It provides a right direction to “jain religion” to our generation.

Sourabh Jain, Agra

जमाना

एक सुबह टहलते हुए
पूछा मैंने कमरदर्द से झुके पेड़ से,
शान्त था बुढ़ाकर जो,
जिसकी अनन्त जटाएँ, दे रही थीं संकेत,
उसके देखे बसन्तों का।

हे तात !

जाने कब से यूँ ही

जीवों की क्षुधा शान्त करते रहे हो तुम,

जमाना कब का बदल गया है

पानी हो गये हैं, खून के रिश्ते तक,

और तुम !

और भी निःस्वार्थ, निष्काम

परोपकार में निरत हो?

वृक्ष मुस्कुराया

फिर बोला मुँह बिचकाकर

गर छोड़ ही दी है, सारी शर्म-ओ-हया मानव ने,

यदि उतार दी है लाज की चदरिया

तो क्या मैं भी छोड़ दूँ अपनी प्रकृति?

यदि कृतघ्नता ही है आधुनिकता का प्रताप,

तो मुझे रहने दो रूढ़िवादी ही,

फिर कुछ सोचकर बोला,

अगर फरेब ही है नव्यता का अनिवार्य तत्व,

तो मैं पुरातनपंथी, सड़ा-गला ही भला हूँ!

निशान्त जैन ‘निश्चल’, मेरठ

O Lord, I Pray to you

O Lord, I pray to you
to be with me always,
May I always cherish your existence,
in various forms and ways.

O Lord, I pray to you
to always be my guide,
even, if I am left alone
may you be there on my side.

O Lord, I pray to you
to always show me the right path
may you hold my hand firmly,
before any task I start.
May all my life,
I think and praise you,
this only O Lord, I pray to you

- Ankita Patni, Ajmer (Raj.)

तब तुम्हारी बहुत याद आती है ...

सर्दी के मौसम में
अधिकतर नींद अचानक खुल जाती है।
हर दिन, पलभर में
ये बहम तोड़ जाती है -
'कि किसी की उँगलियाँ
मेरे बालों को सहलाती हैं'।
मालूम पड़ता है जब कि
सुबह की मंद पवन इस तरह लहराती है।
माँ ! माँ तब तुम्हारी बहुत याद आती है।
हजारों मरीजों को देखता हूँ
अस्पताल में चिल्लाते-कराहते
दर्द से झटपटाते
पर जब शिशु विशेषज्ञ के इंजेक्शन के डर से
कोई बालिका उछल के
जब अपनी माँ की गोद में चली जाती है।
माँ ! माँ तब तुम्हारी बहुत याद आती है।
यूँ दूर रहने की तो आदत सी हो गई है,
बाहरी खाना तो जीवन-शैली हो गई है।

स्वाद जीभ को आता नहीं
ध्यान चीज पर जाता नहीं
रसहीन पकवानों से काया मैली हो गई है,
परन्तु कोई लोकल की लड़की
अपने घर का खाना
जब मुझे चिढ़ा-चिढ़ा कर खाती है,
माँ ! जब तुम्हारी बहुत याद आती है।
कालेज से निकलते ही
देखता हूँ कि
स्कूल की घंटी पर
छोटे बच्चे एक दिशा में
दौड़े चले जाते हैं।
जहाँ उनके इन्तजार में कोई खड़ा है,
जिसकी अँगुली पकड़कर वे आश्वस्त हो जाते हैं।
उन स्त्रियों के वात्सल्य पर लालायित होते-होते
जब नजर अपनी सूनी हथेली पर चली जाती है।
माँ ! माँ तब तुम्हारी बहुत याद आती है।
दिन भर की थकावट के बाद

शाम में दोस्तों से मिलके
राहत काफी मिल जाती है।
परन्तु बात जब सोने की आती है,
तो हर रात
हॉस्टल के कढ़े सिरहाने पर
जब देर तक नींद नहीं आती है।
माँ ! माँ जब तुम्हारी बहुत याद आती है,
मेरे सारे प्रयासों में
तुम्हारे स्पर्श की कमी नजर आती है,
पर, किसी भी रूप में हो,
तुम्हारी परछाईं मुझमें स्फूर्ति भर जाती है।
फिर भी भाग्यवानों को देखकर,
न जाने क्यों मुझे ईर्ष्या सी आ जाती है।
दिन के चौबीसों घंटे, हर मिनिट, हर सैकण्ड
जब घड़ी की सुइयाँ टक-टक करती जाती हैं,
माँ ! माँ जब तुम्हारी बहुत याद आती है।

सौरभ जैन, अशोकनगर

स्पर्श

महत्त्वपूर्ण चिट्ठी

एक बार मैं भोपाल से कोटा जा रहा था। न जाने क्यों मुझे उस समय अपने परिवारजनों, खासकर छोटी बेटा मंजू की बहुत याद आ रही थी। मंजू थी भी बड़ी चंचल, परन्तु स्वभाव से एकदम जिदी। उसे मैं बहुत प्यार करता था।

मार्ग में एक गाँव में बस रुकी और गाँव के बच्चे बस के इर्द-गिर्द जमा हो गए। उन बच्चों में एक नन्ही-सी लड़की भी थी, जो मेरी मंजू की उम्र की होगी, मगर वह दृष्टिहीन थी। उसका चेहरा चेचक के दाग से भरा था, जो उसकी कहानी साफ कह रहा था, सभी बच्चे उसका मजाक उड़ा रहे थे। कोई उसे धकियाता तो कोई चपत मारकर भाग जाता। जब वह बेचारी इधर-उधर टटोलने लगती तो सब हँस देते। मुझे मेरी मंजू याद आई। क्या कर रही होगी वह? जिद तो नहीं कर रही होगी? मेरी आँखों में आँसू भर आए। मैं अपनी जगह से उठा और बैग से बिस्किट का पैकेट निकाल नीचे

उतरा। मैंने पैकेट खोला। 'ले बेटा, बिस्किट हैं। क्या नाम है तेरा?' उसकी अंधी आँखों में आँसू भर आए।

'बाबूजी मेरा कोई नाम नहीं है। कोई कुछ कहता है, कोई कुछ' - उसने अपनी तुतलाई बोली में कहा। बिस्किट का पैकेट पाकर उसका चेहरा खिल उठा और उसने पैकेट सीने से चिपका लिया। मैं अपनी आँखें पोंछने लगा कि कंडक्टर ने आवाज दी। मैं उसके पास से उठा। 'बाबूजी!' उसका नन्हा-सा हाथ मेरे हाथ पर आया। वह कुछ भी न बोल सकी, परन्तु उस स्पर्श से मैं उसके अंतर्मन की भावनाओं को अच्छी तरह समझ गया।

बस चल पड़ी और साथ ही मैं भी, उस नन्हें कोमल ममता भरे और ममता के प्यासे स्पर्श को अपने मन में सँजोए हुए।

आज मैं 67 वर्ष का हूँ, मगर उस भोली मासूम बच्ची का वह ममताभरा स्पर्श आज भी मेरे मन में ताजा है।

- बनी रायरीकर